

---

shrIdurgA ApaduddhArAShTakam

श्रीदुर्गा आपदुद्धाराष्टकम् अथवा दुर्गापिदुद्धारस्तोत्रम्

Document Information

---

Text title : durgaa aapaduddhaaraaShTakam.h

File name : durga-a8.itx

Category : aShTaka, devii, durgA, devI

Location : doc\_devii

Transliterated by : Kapila Shankaran Love kapilalove at gmail.com

Proofread by : Kapila Shankaran Love, Nat Natarajan, D.K.M. Kartha

Description-comments : siddheshvarItantre

Source : Brihatstotraratnakara 408

Latest update : September 27, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 27, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीदुर्गा आपदुद्धाराष्टकम् अथवा दुर्गापदुद्धारस्तोत्रम्



दुर्गापदुद्धारस्तवराजः

नमस्ते शरण्या शिवे सानुकम्पे नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे ।  
नमस्ते जगद्धन्धपादारविन्दे नमस्ते जगत्तारिणि त्राडि दुर्गे ॥ १ ॥  
नमस्ते जगस्थिन्यमानस्वरूपे नमस्ते मलयोगिविज्ञानरूपे ।  
नमस्ते नमस्ते सदानन्द रूपे नमस्ते जगत्तारिणि त्राडि दुर्गे ॥ २ ॥  
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः ।  
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री नमस्ते जगत्तारिणि त्राडि दुर्गे ॥ ३ ॥  
अरण्ये रणे दारुणे शुन्नुमध्ये जले सङ्कटे राजगळे प्रवाते ।  
त्वमेका गतिर्देवि निस्तार उतुर्नमस्ते जगत्तारिणि त्राडि दुर्गे ॥ ४ ॥  
अपारे मलाद्गुस्तरेऽत्यन्तघोरे विपत्सागरे मज्जतां देवभाजाम् ।  
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका नमस्ते जगत्तारिणि त्राडि दुर्गे ॥ ५ ॥  
नमश्चण्डिके याएडदोर्दण्डलीलासमुत्पण्डिता षण्डलाशेषशत्रोः ।  
त्वमेका गतिर्विघ्नसन्धोडडर्त्री नमस्ते जगत्तारिणि त्राडि दुर्गे ॥ ६ ॥  
त्वमेका सदारोपिता सत्यवादिन्यनेकाभिला क्रोधना क्रोधनिष्ठा ।  
छडा पिङ्गला त्वं सुषुम्ना य नाडी नमस्ते जगत्तारिणि त्राडि दुर्गे ॥ ७ ॥  
नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे सदासर्वसिद्धिप्रदातृस्वरूपे ।  
विभूतिः सतां कालरात्रिस्वरूपे नमस्ते जगत्तारिणि त्राडि दुर्गे ॥ ८ ॥  
शरणमसि सुराणां सिद्धविधाधराणां  
मुनिमनुजपशूनां दस्युभिस्त्रासितानाम् ।  
नृपतिगुडगतानां व्याधिभिः पीडितानां  
त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसीद ॥ ९ ॥  
छंदं स्तोत्रं मया प्रोक्तमापदुद्धारलेतुकम् ।  
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा पठनाद्द्वोरसङ्कटात् ॥ १० ॥  
मुच्यते नात्र सन्धो भुवि स्वर्गे रसातले ।  
सर्वं वा श्लोकमेकं वा यः पठेद्भक्तिमान् सदा ॥ ११ ॥

स सर्वं दृष्टुं त्यक्त्वा प्राप्नोति परमं पदम् ।

पठनादस्य दैवेशि किं न सिद्ध्यति भूतले ॥ १२ ॥


स्तवराजमिदं देवि सङ्क्षेपात्कथितं मया ॥ १३ ॥

एति श्रीसिद्धेश्वरीतन्त्रे उमामहेश्वरसंवादे श्रीदुर्गापिद्दुद्धारस्तोत्रम् ॥


var उरगौरीसंवादे आपद्दुद्धाराष्टकस्तोत्रं

Encoded and Proofread by Kapila Sankaran, Nat Natarajan

---

——  
*shrIdurgA ApaduddhArAShTakam*

pdf was typeset on September 27, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

